बी. ए. भाग-1
हिन्दी - रचना
(गोस्वामी तुलसीदास)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज
डुमरॉव बक्सर

गोस्वामी तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएँ।

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य की भक्तिकालीन राम - भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इनका जन्म सन् 1532 ई. में और निधन सन् 1623 ई. में माना गया है, यो इनका जन्म एवं निधन काल आज तक विवादास्पद है। इनकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं - रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, वैराग्य संदीपनी आदि।

तुलसीदास ने अपनी साहित्य-साधना द्वारा भारतीय संस्कृति का परिष्कार करने के साथ ही हिन्दी को गौरवान्वित किया है। भक्ति के क्षेत्र में लोक-संग्रह की भावना का सर्वप्रथम अंकुर रामानंद जी में मिलता है। उसी का पल्लवित-पुष्पित रूप तुलसी-साहित्य में मिलता है। तुलसीदास एक ही साथ भक्त कवि और लोक-नायक दोनों थे। डॉ. ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद भारत का दूसरा लोकनायक माना है।

तुलसी के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती किसी कवि की दृष्टि इतनी विशाल नहीं थी। इन्होंने लोक जीवन के विविध पक्षों को अपने सामने रखकर समन्वय की विराट चेष्टा की है। कर्म, उपासना और ज्ञान में से किसी एक पर ही बल देकर गोस्वामी जी ने इन तीनों में समन्वय स्थापित किया है। इस प्रकार उन्होंने आर्ष-परंपरा को सुदृढ़ किया है। उन्होंने अपने साहित्य में पूर्वजों के समस्त ज्ञान को समेट लिया है।

तत्कालीन युग के सम्पूर्ण विरोधों का समाहार करते हुए तुलसी ने राम-भक्ति की ऐसी मंदाकिनी प्रवाहित की जिसमें सभी बह चले।

तुलसी के आराध्य दशरथ सुत राम है। इनकी भक्ति दास्य है। राम में निर्गुण-निराकार परब्रह्म परमेश्वर, विष्णु के अवतार राम एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तीनों का समन्वय है। इन्होंने राम के शक्ति, शील और सौंदर्य से पूर्ण स्वरूप को खड़ा कर एक आदर्श रखा है। राम के चरित्र में तुलसी ने शील को सर्वाधिक महत्व दिया है। इनके शील में नियम और सदाचार ही नहीं, जगत के वाह्य नियमों का भी समन्वय दिया है। इनके शील में नियम और सदाचार ही नहीं है समन्वय भी है। प्रभु श्रीराम हमारे अपराधों को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। तुलसी ने श्री राम के माध्यम से व्यापक लोक-धर्म की चर्चा की है -

सीय राममय सब जग जानी।

तुलसी के काव्य में दर्शन, भक्ति और काव्य का सुन्दर समन्वय हुआ है। इसीलिए रामचरितमानस धर्म-ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है। फिर भी इनकी कविता में श्रेष्ठ काव्य के सम्पूर्ण तत्व अपनी पूर्णता के साथ विद्यमान है। इनके काव्य में भाव-पक्ष तथा कला पक्ष दोनों का सुन्दर समन्वय हुआ है। सम्पूर्ण भारतीय आदर्श हमें तुलसी के साहित्य में एकत्र मिल जाते हैं। आदर्श राजा, आदर्श प्रजा, आदर्श मंत्री, आदर्श राज्य, तथा माता पिता भाई, पति, पत्नी आदि के आदर्श हमें तुलसी के

मानस में मिल जाते है। यही कारण है कि, सम्पूर्ण भारतीय समाज का यह कण्ठाहार बना है।

तुलसी मुख्यत: भक्तिरस के कवि है। फिर भी रसों का संतुलित नियोजन उनके काव्य में मिलता है। मानस में मानव जीवन की विविध परिस्थितियों एवं भावनाओं का मार्मिक चित्र अंकित है। तुलसी ने अपने समय की समस्त रचना-शैलियों को अपनाया है। इन्होंने प्रबंध एवं मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों की रचना की है। 'मानस' जहाँ महाकाव्य है वही गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका आदि मुक्तक। उन्होंने सभी अलंकारों का यथोचित प्रयोग किया है।

गोस्वामी जी ने ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं में रचनाएँ की है। लेकिन मूलत: ये अवधी के रचनाकार है। इनकी अवधी पूर्ण परिनिष्ठित 'ग्राम-गिरा' है। इनकी अवधी में भोजपुरी बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, संस्कृत, फारसी आदि के शब्दों का भी किया गया है। इनका शब्द-चयन पाण्डित्यपूर्ण है। केशव की तरह इनमें चमत्कार प्रदर्शन नहीं। इनकी दृष्टि रस या भाव पर अधिक है। इसलिए इनकी भाषा सरस और भाव-व्यंजक है। इनके छंदों में दोहा-चौपाई के अतिरिक्त कुण्डलिया, सवैया, बरवै, घनाक्षरी, तोमर त्रिभंगी आदि की प्रधानता है।

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित-मानस के प्रस्तुत प्रसंग में राम के परमब्रह्मत्व एवं सर्वान्तरयामी निर्गुण-निराकार रूप की ओर संकेत किया है। यहाँ यह बताया गया है कि राम मर्यादापुरुषोत्तम है तथा श्रुति-सेतु पालक हैं। वे निश्छलता, भक्ति-भाव एवं सेवा से प्रसन्न होते हैं।

सारांशतः कहा जा सकता है कि तुलसी ने अपने काव्य में भाव-पक्ष एवं कलापक्ष दोनों का मणि-कांचन संयोग प्रस्तुत किया है जिसके कारण उनका काव्य विश्व-साहित्य की निधि हो गया है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी- विभाग
डी. के. कालेज
डुमराँव (बक्सर)